प्रा क्क थ न

: प्र थ म अ ध्या य :

यशपाल :

जीवन-वृत्त तथा साहित्य-साधना

-- प्राक्कथन --

कुछ वर्ष पूर्व जब मैं एम. ए. का छात्र था, यशपाल का बृहद् उपन्यास " झूठा - सच " तथा कहानी-संग्रह "चित्र का शीर्षक " मेरे पढ़ने में आया। यशपाल के आधुनिक विचारों से मैं इतना अभिभूत हो गया कि मैंने यशपाल के सभी उपन्यास पढ़ डाले। " मनुष्य के रूप " और "दिव्या" इन उपन्यासोंने तो मुझे यशपालमय ही बना डाला। तब से यशपाल पर कुछ न कुछ लिखाने की ख्वाहिश मन में पैठ गयी।

हालात बदले, यशपाल पर कई शोध-निबंध लिखे जाने लगे। मेरे मनकी ख्वाहिश मन में ही रह गयी। एम. फिल. के छात्र के रूप में शोध प्रबंध के लिए विषय देने का जब मौका आया तब तड़ाक से मैंने "यशपाल" का नाम लिया। "यशपाल के उपन्यासोंके क्रान्तिकारी पात्र " यह विषय चुन लिया। जैसे जैसे मैं गहराई में उतरता गया, मुझे मालूम हुआ यशपाल इतने सीधे-सादे कलाकार नहीं है। उनकी आत्मकथा "सिंहावलोकन भाग १, भाग २, भाग ३" पढ़ने के बाद मेरा यशपाल के जीवन और विचारों से गहरा परिचय हो गया। मैं उनके उपन्यासोंमें चित्रित पात्रों में सशस्त्र क्रान्तिकारी तथा सामाजिक क्रान्तिकारी पात्रों की खोज में लगा रहा।

यशपाल का उपन्यास साहित्य विराट है। उनके सभी उपन्यास प्रगतिशील, समाजवादी दृष्टि लिए हुऐ है। उनके उपन्यासों का स्वागत भी पाठकों ने अच्छा किया है। समीक्षकोंने उनके आधुनिक विचारोंपर कटु से कटुतर आलोचनाएँ भी की है। इस प्रकार कभी शान्त और कभी दहाडे भरनेवाले उनके साहित्य सागर में गोते लगाकर सामाजिक क्रान्तिकारी पात्रों रूपी मोती निकालनेका कठिन कार्य मुझे इस लघु - प्रबन्ध में करना है, यह सोचकर मै जरा घबरा गया, परंतु हिम्मत से प्रयत्न करता

रहा । मन्थर गति से क्यों न हो परन्तु यशपाल के उपन्यासों के क्रान्तिकारी पात्रोंतक मैं पहुँच गया ।

यशपाल के ग्यारह मौलिक उपन्यासों में से उनके लघु-उपन्यास "बारह घण्टे " , "अप्सरा का श्राप" और "क्यों फँसे " इनकी विशेष समीक्षा नहीं हो पायी है । उनके बृहद् उपन्यासों की ओर ही समीक्षक अधिक आकृष्ट हुए है । प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध में यशपाल के सामाजिक , क्रान्तिकारी तथा प्रगतिशील विचारों के वाहक उनके सभी उपन्यासों के पात्रों को समान रूप से न्याय देने का प्रयत्न किया है । उपन्यास छोटा है इसीलिए पात्र कम महत्वपूर्ण नहीं माने है।

यशपाल का सशस्त्र क्रान्तिकारी युवा जीवन, साहित्य में विकसित उनकी सामाजिक प्रतिबध्दता और उनकी उच्च मध्यवर्गीय रहन-सहन इन तीन नदियों का त्रिवेणी संगम प्रस्तुत लघु-प्रबंध है ।

इस लघु-प्रबंन्ध के प्रथम अध्याय में यशपाल का जीवन-वृत्त जिसमें जन्म से लेकर मृत्युतक की सभी घटनाओं पर प्रकाश डाला है , और साथ ही साथ उनकी साहित्य साधना का परिचय भी संक्षेप में दिया है ।

व्दितीय अध्याय " भारत के क्रान्ति आंदोलन के इतिहास" के बारेमें है । विशेषत: शहीद भगतसिंग , चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव तथा राजगुरु आदि क्रान्तिकारीको के साथ यशपाल ने भी महत्वपूर्ण कार्य किया है । भारत के क्रान्ति आंदोलन में यशपाल किस प्रकार एक महत्वपूर्ण नेता बनकर कार्य कर रहे थे , इसका विश्लेषण इस अध्याय में किया गया है ।

तृतीय अध्याय में यशपाल के ग्यारह मौलिक और पाँच अनूदित उपन्यासों का संक्षेप में परिचय दिया गया है। हर उपन्यास की संक्षेप में कथावस्तु और कथावस्तु की शिल्पगत विशेषताओं को भी प्रकाशित किया है।

चतुर्थ अध्याय में यशपाल के उपन्यासों के सशस्त्र क्रान्तिकारी तथा सामाजिक क्रान्तिकारी पात्रों का विस्तृत चित्रण किया गया है। यशपाल के सामाजिक क्रान्तिकारी संबंधी विचारों का उद्घाटन उनके पात्रों के माध्यम से कैसे किया है? उनके विचारों के साथ उनके पात्र प्रामाणिक हैं या नहीं? उनके विचार इस भारत वर्ष की भूमि में कहाँ तक सयुक्तिक है? इन सब प्रश्नों के उत्तर ढूँढने प्रयास इस अध्याय में किया है। वैसे देखा जाय तो "दादा कामरेड" के "दादा" के सिवाय सशस्त्र क्रान्ति से प्रभावित एक भी पात्र उनके उपन्यासों में नही मिलता। "दादा" भी आगे चलकर "सामाजिक क्रान्तिकारी" बन जाते हैं। इसीलिए प्रस्तुत अध्याय में यशपाल के उपन्यासों के "सामाजिक क्रान्तिकारी" पात्रों का चित्रण किया गया है।

पंचम अध्याय " उपसंहार" मे यशपाल के उपन्यासों के पात्रों के आधारपर उनकी सामाजिक पतिबध्दता की आलोचना की है।

इस लघु-प्रबंध में जो विचार अभिव्यक्त हुऐ है तथा निष्कर्ष निकाले हैं वे लेखक के अपने हैं। इस में कुछ त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। इन त्रुटियोंको स्वीकार करते हुऐ भी प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। यशपाल के क्रान्तिकारी पात्रों पर भविष्य में अधिक गहराई के साथ अध्ययन करना मेरा अभिष्ट रहेगा।

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध का लेखन यदि मेरे निर्देशक श्रध्देय डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र न होते तो मुझसे शायद ही पूरा हो पाता। श्रध्देय गुरुवर डॉ. मिश्रजी के बार बार मिले प्रोत्साहन, तथा बीच बीच में मिली डाँटकियों के कारण ही मै यह कार्य पूरा कर सका। आपकी अनुपस्थिति में श्रध्देय सौ. भाबीजी ने भी मेरे कार्यकी सराहना करके मुझे प्रोत्साहित किया। आप दोनों का सदैव ऋणी रहना ही मै हृदय से चाहता हूँ।

इस कार्य में मेरे सुहृद प्रा. दुणकर सु.ना., प्रा. सावंत एम.बी [मंगलवेढा कॉलेज]] प्रा. शांनि. काबले, प्रा. वि.रा. शोटे, प्रा. डॉ. कृ जो. इंगोले आदि मित्रो ने जो समय समयपर प्रोत्साहन दिया उसके प्रति मैं हृदयसे कृतघ्नता व्यक्त करता हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रन्थपाल, सांगोला महाविद्यालय के प्रधानाचार्य श्री. य. ना. कदम, ग्रंथपाल श्री. गंगाई आदि ने पुस्तकोंको समय समयपर उपलब्ध कराकर जो सहायता की है, उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मेरा कर्तव्य ही समझता हूँ।

अंत में मेरे विद्यार्थी मित्र श्री. देविदास कसबे की सहायता नही भुलाई जा सकती।

यशपाल के उपन्यासों के पात्रों की सामाजिकता, गतिशीलता तथा आधुनिकता परखने का प्रयास करते समय जिन संदर्भ ग्रंथों का सहारा मिला है। उन सभी ग्रंथ - लेखकों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

इस लघु-प्रबंन्ध को समय पर टंकित करनेका कार्य श्री. मोहनराव कुलकर्णी ने किया है। उनके प्रति भी मै कृतज्ञ हूँ।

सांगोला.
दि. मई १४, १९८४

[प्रा. वि.वि. जाधव]

: प्रथम अध्याय :

यशपाल : जीवन वृत्त ✓

किसी भी महान साहित्यकार के कृतित्व पर उसके व्यक्तिगत जीवन एवं अनुभवों की गहरी छाप रहती है। वह कभी भी युग की समाष्टिगत चेतनाओं से विमुख होकर साहित्य सृजन नही कर सकता। उसने किन परिस्थितियां एवं संस्कारों से प्रेरित होकर साहित्य-सृजन किया है, यह जानने के लिए हमें उसके वास्तविक जीवनसे परिचित होना आवश्यक है।

प्रारंभिक जीवन और पारीवारिक स्थिति --

हिन्दी साहित्य को आदर्शवादी कुहेलिका से निकाल नग्न यथार्थ की प्रखर रोशनी में ला पटकनेवाले इस साहित्यकार का जन्म ३ दिसंबर १९०३ को फिरोजपुर छावनी में एक खत्री परिवार में हुआ था। आपकी माता श्रीमती प्रेमदेवी फिरोजपुर के प्रसिध्द आनाथालय में अध्यापिका का काम करती थी। यशपाल की आपनी पैतृक संपत्ति नही के बराबर थी। आपके पिता लाला हीरालाल कांगडा के स्थायी निवासी थे। अपनी इस जमीन - जायदाद के बारे में स्वयं यशपाल की व्यंग्योक्ति देखिए, " हजार डेढ हजार वर्ग गज जमीन का टुकडा और कच्चा मकान जो कुछ था, उसके लिए कांगडे जाकर बसना न मेरी मॉं को पसंद था, न मुझे।" [१] अपनी इस जायदाद पर डटे लाला हीरालालजी कांगडे में साहूकारी का कारोबार करते थे। उनके इस कारोबार के बारे में यशपालजी कहते है -- " उनका कारोबार था, बिना लिखे-पढे या प्रकट हिसाब रखे रुपया सूदपर देना। रुपया वे भारी सूदपर देते थी। रकमें छोटी - छोटी होती थीं। " [२] यशपाल के दो

---

१. यशपाल : सिंहावलोकन - प्रथम भाग : पृष्ठ ६१. संस्करण -१९७८.
२. यशपाल : सिंहावलोकन - प्रथम भाग : पृष्ठ ६१. संस्करण-१९७८

चाचा थे। तीनों भाईयोंमें हमेशा वैमनस्य ही था। कांगडे में उनके पिताजी आर्थिक दृष्टिसे कमजोर होकर भी "लाला" के सम्मानित शब्द से संबोधित हुआ करते थे। वे उच्च स्तर के प्रतिष्ठित एवं इज्जतदार व्यक्तियोंमेंसे थे। लालाजी का यह सूद व्यापार पारीवारिक झगडों में ही समाप्त हुआ, और उन्हें शहर में साधारण नौकरी करनी पडी। अपने परिवार की इस दैन्यावस्था से यशपाल का आत्पसम्मान आहत होता था। यह भावना यशपाल ने इन शब्दों में प्रकट की है, " मैं जब कांगडे गया, अपने पिता की स्थिती मुझे असम्मानजनक ही अनुभव हुअी।" [१]

यशपाल की माता, श्रीमती प्रेमादेवी, उच्च कुलोत्पन्न परिश्रमी, साहसी और सहनशीला नारी थीं। उनकी माता के लोग अपने पूर्वजों को शाम्चोरासी के राजाओं के राज मंत्री बताते थे। विवाह के समय माता तथा पिता की आयु में पर्याप्त अंतर था। प्रौढावस्था में विवाह होने के कारण पति - पत्नी अधिक दिन साथ नहीं रह सके। पति की मृत्यु के बाद यशपाल और उनके छोटे भाई धर्मपाल के पोषण का भार उनकी माताजी ने अपने कंधोंपर ले लिया।

माता के संस्कार —

पिता की मृत्यु के बाद उनकी माता कांगडा का त्याग कर स्थायी रूप से पंजाब में रहने लगीं। उनके उपर अपने संबंधी आर्यसमाजी होने के कारण आर्य समाज का पूरा प्रभाव था। पहलेसेही शिक्षित होने के कारण अपने पुत्रों को उच्च शिक्षित करने के लिए वे वैतनिक कार्य करने लगी। अपनी माता के बारे में यशपाल की यह कृतज्ञता निम्मलिखित शब्दोंमें प्रकट होती है, "हम दोनों को सफल और आदर्श बनाने के लिए माँ, कांगडा का पहाडी इलाका छोडकर पंजाब के लू से तपनेवाले मैदानों में "आर्य कन्या पाठशाला" में नौकरी करके निर्वाह कर रही थीं। इस नौकरी से माँ को कुछ

उद्देश्य या परमार्थ के कर्तव्य की पूर्ति का संतोष होता था। "[१]
इस काल में उनका वेतन केवल ३० रुपये था। परिणामस्वरूप वे अपने बच्चों को अधिक सुविधाएँ देने में असमर्थ थी। स्वयं यशपाल भी अपने इस दयनीय स्थिति से पूरे वाकिफ हो गये थे। वे भी आपनी माता के गृहकार्य मे उसकी सहायता करने में कभी नही हिचकते थे। " माँ स्कूल से थकी लोटकर चोका बर्तन करें, यह कुछ अन्याय सा जंचता। इसलिए मैं स्कूल जाने के पहले चोका बर्तन कर देता था। पानी प्राय: आधा फर्लांग से लाना होता था।"[२]
इस प्रकार यशपाल गरीब जरूर थे, मगर उन्होंने अपनी इज्जत को बनाए रखने के लिए अपनी माता का दूर से पानी लाना कभी स्वीकार नही किया। गरीबी में उन्होंने कभीभी अपनी इज्जत ओर स्वाभिमान को नही बेचा।

अध्ययनशील तथा परिश्रमी वृत्ति के कारण कुछ काल पश्चात ही यशपाल की माँ "आर्य कन्या पाठशाला" की मुख्याध्यापिका बन गयीं। चर्खा कातनेकी शोकीन होने के कारण अपने बच्चों पर भी वे "स्वदेशी" के संस्कार करती थीं। वे आधुनिक विचारों की महिला थीं। अपनी वृध्दावस्था में भी हास्य-विनोद उनके जीवन के मुख्य अंग रहे थे। उनकी मेहनत, मेधावी बुध्दि, स्वदेश-प्रेम का प्रभाव यशपाल पर पूरा का पूरा लक्षित होता है। उनका देहान्त १५ अगस्त १९६४ को हुआ।

---

१. यशपाल : सिंहावलोकन - प्रथम भाग : पृष्ठ ६१ संस्करण १९७८.
२. यशपाल : सिंहावलोकन - प्रथम भाग : पृष्ठ ५५ संस्करण १९७८.
३. यशपाल : सिंहावलोकन - प्रथम भाग : पृष्ठ ५६ संस्करण १९७८

अध्ययन —

१. गुरुकुल कांगडी :--

आर्यसमाजी प्रभाव के कारण तथा आर्थिक विपन्नता के कारण यशपाल की माताजीने यशपाल को प्रारंभिक शिक्षा "गुरुकुल कांगडी" में देना ही उचित समझा। सात-आठ वर्ष तक यशपाल वैदिक धर्म-पध्दति शिक्षा लेते रहे। वहाँ का कडा अनुशासन [redacted] उन्हें प्रिय नहीं था। वहाँ की दिनचर्या के बारेमें यशपाल कहते है, " नंगे पाँव खडाऊँ पहनकर चलना, काठपर सोना, सख्त सर्दी में सूर्योदय से पहले ठण्डे पानी से नहाना और भोजन के बाद अपना लोटा-थाली स्वयं माँजना। इसके अलावा किसी दूकान अथवा स्त्री का मुँह न देखना।" [१] ऐसे कडे शासन में उनका मन कभी नहीं रमा। जब वे सातवी कक्षा में थे तब असाध्य रूप से संग्रहणी के शिकार हुए। बीमार यशपाल को दूध-मलाई, घी-शक्कर मिलती देख वहाँ के अन्य साथी उनपर फब्तियाँ कसने लगे। यह सब उनके लिए असह्य सा था। उस वातावर से मुक्ति पाकर ही उन्होंने सन्तोष की साँस ली। उनकी प्रसन्नता का प्रमाण इस वाक्यों में मिलता है, "गुरुकुल में दु:साध्य बीमारी से बीमार हो जाना मेरे भविष्य-जीवन के लिए अच्छा ही हुआ। इस बीमारी के कारण मुझे सातवी कक्षा से गुरुकुल छोड देना पडा। मुझे लाहोर के डी.ए.वी. स्कूल में भर्ती करा दिया गया।" [२]

---

१. यशपाल - सिंहावलोकन - प्रथम भाग : पृष्ठ ४३ संस्करण १९७८.
२. यशपाल - सिंहावलोकन - प्रथम भाग : पृष्ठ ४६ संस्करण १९७८.

२] डी. ए. वी. स्कूल लाहोर --

गुरुकुल कांगडी के पश्चात् यशपाल को लाहोर के डी.ए.वी. स्कूल में भर्ती किया गया। वहांपर भी आर्यसमाजी प्रभाव के कारण शिक्षा का माध्यम हिन्दी था, परंतु लाहोर में उर्दू सीखना अनिवार्य था। मेधावी यशपाल ने १९१८ ई. तक स्व प्रयत्न से उर्दू को अवगत किया।

३] सरकारी मिडिल स्कूल --

१९१९ ई. में यशपाल की माँ फिरोजपुर छावनी की प्राइमरी आर्य कन्या पाठशाला में अध्यापिका बन जाने के कारण यशपाल डी.ए.वी. छोडकर "सरकारी मिडिल स्कूल" में दाखिल किया गया। वहांपर आर्यसमाजी लाजवन्तराय के सहवास में यशपाल ने प्रचुर मात्रा में साहित्य पढा। यशपाल के लेखक-जीवन की अनेक प्रारंभिक रचनाओं के लिए उन्हें उस स्कूल में बहुत ख्याति मिली। इस स्कूल की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के पश्चात् उन्होंने "मनोहरलाल मेमोरियल हाईस्कूल" में शिक्षा प्राप्त की। १९२२ई. में अपने मैट्रिक के अध्ययन के साथ साथ यशपाल क्रान्तिकारी कार्यों में भी भाग लेते रहें। अपनी विलक्षण बुध्दिमत्ता, जागरूकता एवं परिश्रम के फल स्वरूप वे अपने स्कूल में प्रथम स्थान पाकर, प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण हुए। इस समय उनके मनपर काँग्रेस प्रचार, और क्रांति - कार्य दोनो कार्योंके बारेमें दुविधा निर्माण हुई थी। अपनी दुविधाजनक मन:स्थिति का उन्होंने सुंदर वर्णन किया है, " मैं इस दुविधा में ही था कि मैट्रिक की

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

परीक्षा का परिणाम प्रकाशित हुआ। मेरे लिए इस परिणाम की खास बात यह थी कि मैं फर्स्ट डिवीजन में पास हुआ था और अपने स्कूल में प्रथम आया था।"[१]

४] नेशनल कालिज —

मेट्रिक पास होने के बाद महाविद्यालयीन शिक्षा लेने के लिए यशपाल के सामने विकट समस्या खडी हुई। माँ का मत था, लडका फिरोजपुर के " रामसुखदास कालिज " में पढकर स्नातक हो जाये, और सरकारी नौकरी करके परिवार की स्थिति संभालता रहे। यशपाल यह खरीदी गुलामी नहीं चाहते थे। क्रान्तिकारियों के प्रभाव से वे दिनो दिन क्रान्ति आंदोलन की योजनाओं की ओर आकर्षित हो रहे थे। यशपाल ने लाहोर के " नेशनल कालिज " में शिक्षा लेने का प्रस्ताव रखा। जीविकोपार्जन के लिए " नेशनल कालिज बेकार था, परंतु यशपाल की क्रान्ति ज्योति को ज्वालाग्नि का रूप देने के लिए यहाँ की राष्ट्रवादी शिक्षा उन्हें बहुत उपयुक्त साबित हुई। अध्ययन के साथ अतिरिक्त समय में अध्यापक की नौकरी भी अपने की और अपने परिश्रम के बलपर १९२५ ई. में "नेशनल कालिज" से बी. ए. किया। उसी वर्ष "पंजाब विश्वविद्यालय" से "प्रभाकर" की परीक्षा भी पास कर ली। इस " नेशनल कालिज" ने ही यशपाल के जीवन को एक महत्वपूर्ण मोड दिया। यहींपर यशपाल अनेक प्रसिध्द क्रान्तिकारियों के संपर्क में आये। भगतसिंग, सुखदेव और भगवती चरण जैसे महान क्रान्तिकारी इसी कालिज के विद्यार्थी थे। ये सभी लोग असहयोग आन्दोलन ध्दारा देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के समर्थक ही नही थे, बल्कि इस उद्देश्य की प्राप्ति के [redacted] लिए जीवन न्योछावर करनेका दृढ संकल्प कर चुके थे।

---

१. यशपाल : सिंहावलोकन - प्रथम भाग : पृष्ठ ७२ संस्करण १९७८

यशपाल ने काँग्रेस के गांधीवादी मार्ग की अपेक्षा क्रान्तिकारी मार्गकोही अधिक विश्वसनीय माना। इस कालिज के इतिहास के प्रोफेसर "जयचन्द्र विद्यालंकार" के क्रान्ति के लिए बार बार प्रोत्साहित करनेका प्रभाव भी यशपाल पर रही। एक बार प्रो. जयचंद्रजी से यशपाल ने का था " मैं विदेशी सरकार को किसी प्रकार का भी सहयोग नहीं दूंगा, क्यों कि मै अपने देश में विदेश शासन जमाये रखने के पक्ष मे नहीं हू।" [१]

इधर क्रान्तिकारियों ने भी "क्रान्तिकारी दल" और "नौजवान भारत सभा" की स्थापना की थी। भगतसिंग और सुखदेव इसी कार्य केलिए कालिज छोडकर पूरी तरह मुक्त हो गये थे। इस प्रकार नेशनल कालिज के संस्कारों ने यशपाल को सशस्त्र क्रांतिकारी बनाया और उनका अगला जीवन अंगारो से भरी अनेक रोमांचकारी घटनाओं से भरा हुआ रहा। वह निष्क्रीय, नीरस और गतानुगतिक नही रहा।

क्रान्तिकारी यशपाल --

यशपाल के, क्रान्तिकी प्रखर अग्निशिखा में कूदने के पीछे अनेक प्रेरक कारण ~~बताये जा सकते है~~ --

१ बचपन से ही विदेशी शासकों के प्रति तीव्र घृणा का भाव। सिंहावलोकन के प्रथम भा में वर्णित काशीपुर द्रोणसागर की नहानेवाली स्त्रियों और अंग्रज सिपाहियों की घटना का बहुत ही गहरा असर यशपाल के मनपर पडा था।

---

१. यशपाल : सिंहावलोकन - प्रथम भाग : पृष्ठ ८४ संस्करण १९७८.

२ गुरुकुल कांगडी तथा नैशानल कालिज लाहोर की राष्ट्र भक्तियुक्त शिक्षा का प्रभाव।

३ सामाजिक असंतोषजनक परिस्थितियाँ।

४ गांधीजी के नेतृत्व में सन १९१८ में सत्याग्रह आंदोलन का का आरंभ होना और सफल हुये बिना १९२१ में स्थगित किया जाना। इस कारण जो जवान देश की पुकारपर स्कूल और कालिज छोडकर इस काम में प्रवृत्त हुअे थे, उनको गहरी चोट पहुँची और विकट निराशा के कारण उन्होंने गांधी - नीति से अलग होकर स्वातंत्रता प्राप्ति का अन्य मार्ग अपनाया जिसमें शांति के स्थानपर क्रान्ति का आग्रह था, और जिसमें यशपाल ने यथासंभव भाग लिया था।

५ स्वभाव से कोमल यशपाल हिंसक वृत्तिके नहीं थे, परंतु अपने अजीज दोस्त भगतसिंग को क्रान्तिकार्य करनेके लिए दिया हुआ वचन निभानेके लिए तथा एक एक करके फरार होनेवाले क्रान्तिकारी साथियों ने बनाई क्रान्तियोजना की जिम्मेदारी निभानेके लिए यशपाल को अपने आप क्रान्ति की सूली को अपनाना पडा। यह परिस्थिति का तकाजा था।

जो भी हो सन १९२६ में यशपाल ने अपने आपको क्रान्तिकारी दल के सुपुर्द किया था। अन्य साथियों और यशपाल के क्रान्तिकार्य मे मूलभूत दृष्टि से फर्क था। यशपाल क्रान्तिकार्य में फूंक फूंक कर कदम रखकर चलते थे, तो आजाद जैसे क्रान्तिकारी भी भावुकता में बहकर सारा गुड गोबर कर देते थे। क्रान्ति में अत्यंत सतर्कतासे रहनेवाले, स्थिर चित्त क्रान्तिकारी, उस जमाने में एकमात्र यशपाल ही थे।

१९२८ में इन क्रान्तिकारियों ने अपनी क्रान्ति का लक्ष्य "सामूहिक सशस्त्र क्रान्ति " द्वारा अपने देश से विदेशी सत्ता का उन्मूलन करना" निश्चित किया था, और उनका उद्देश था -

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

"मनुष्य व्दारा मनुष्य के शोषण का अन्त।" सन १९२८ में ही इस लक्ष्य और उद्देश्य को सामने रखकर इन नवयुवकों ने "हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ" की स्थापना की।

इस से स्पष्ट होता है कि १९२८ से ये युवक पहले सशस्त्र क्रान्तिकारियों की अपेक्षा हुसी समाजवाद की ओर आकृष्ट हो रहे थे, जिन में यशपाल महत्वपूर्ण साथी माने जाते थे। भगत सिंग, सुखदेव और राजगुरू के "इन्किलाब जिन्दाबाद" साम्राज्यवाद का नाश हो, "संसार के मजदूरों एक हो" इन नारों को देखकर ही यह बात साबित हो जाती है।

क्रान्ति - कार्य में यशपाल का योगदान —

१. साण्डर्स वध :--

लाहोर में लाला लजपतराय पर जानलेवा आक्रमण करनेवाले पुलिस अफसर जे.पी. साण्डर्स और विल्यम स्काट के प्रति बदले की भावना इन क्रान्तिकारियों में भडक उठी। १० दिसंबर १९२८ को लाहोर में डी.ए.वी. कालिज के सामने भगत सिंग और राजगुरू ने चंद्रशेखर आजाद के नेतृत्व में साण्डर्स की हत्या करके जो सनसनीखेज गोलीकांड किया, उस क्रान्ति-कार्य के सहायार्थ यशपाल ने रुपया जुटानेका महत्वपूर्ण कार्य बडी चतुराई से किया। इस कार्य में यशपाल का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा।

२. बैंक डकैती :--

यशपाल ने लहोर बैंक में डकैती योजना में भी सहयोग दिया। बैंक जाकर अंदर की स्थिति का ब्योरा ले आने की उनकी जिम्मेदारी थी। वे दस रुपयेका नोट तुडानेके बहाने बैंक में गये और स्थिति

का ब्योरा साथियोंको दिया। उनके मतानुसार बैंक डकैती करना आसान नहीं था। उनका अनुमान अंत मे सही निकला।

३. विधान सभा में बम कांड -

"हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ" ने इन घटनाओं के बाद यह निश्चय किया कि विधानसभा में बम-विस्फोट करके अपने संगठन के इस कार्य के उद्देश्य को पर्चे फेंककर स्पष्ट करना और अपने आप को पुलिस के हवाले कर देना। सशस्त्र क्रान्ति यह नयी परिभाषा भगतसिंग और यशपालने ही तैयार की थी। इस योजना में यशपाल का कार्य प्रत्यक्ष रूप में नहीं दीखा पडता, परंतु सामाजिक क्रान्ति के उनके बदले हुओ विचारोंका प्रभाव इस कार्य पर दीखा पडता है। योजना के अनुसार ८ अप्रैल १९२९ को भगतसिंग और बटुकेश्वर दत्त ने असेम्बली में बम विस्फोट कर समूची विदेशी सरकार की जडों को हिला दिया। क्रान्ति की नयी परिभाषा भगतसिंग व्दारा असेम्बली मे फेके इन पर्चो में इस प्रकार स्पष्ट की गयी, "........क्रान्ति का उद्देश्य कुछ व्यक्तियों का रक्तपात करना ही नही, मनुष्य व्दारा मनुष्य के शोषण की प्रथा का अंत करके इस देश के लिए आत्मनिर्णय का अधिकार प्राप्त करना है।" [१]

विधानसभा बमकांड की योजना के मुख्य सूत्रधारों मे यशपाल भी शरीक थे।

---

१. यशपाल : सिंहावलोकन - प्रथम भाग : पृष्ठ १७९ संस्करण १९७८

४. लाहोर बम फैक्टरी :--

भगतसिंग और बटुकेश्वर दत्त की गिरफतारी के बाद दल द्वारा लाहोर में एक बम फैक्टरी का निर्माण हुआ। बम के निर्माण में दिया यशपाल का योगदान सबसे अधिक महत्वपूर्ण रहा। जयगोपाल, किशोरीलाल, भगवती सिंह बोहरा आदि के साथ यह क्रान्तिकार्य यशपाल ने विशेष सावधानी और सतर्कता से किया।

फरार यशपाल :--

दुर्भाग्यवश लाहोर बम फैक्टरी पर खुफिया पुलिस ने छापा मारा और मकान में उपस्थित व्यक्तियों को गिरफतार किया। यशपाल उस समय मकान में नही थे। इस घटना के बाद यशपाल फरार हो गये। इस घटना के बाद यशपाल फरार हो गये। अपने उस भयानक और अस्थिर जीवन का हृदय भेदी वर्णन यशपाल ने अपनी आत्मकथा "सिंहावलोकन" में किया है। उनकी गिरफतारी के लिए उनपर लगाई 3000 रु. के पुरस्कार की घोषणा निश्चय ही यशपाल को भगतसिंग की श्रेणी मे ला बिठा देती है। फरारी की अवस्था मे यशपाल हाथ पर हाथ धरे चुप बैठने के बजाय क्रान्तिकार्य में सहायक, बम निर्माण का प्रयत्न करने लगे।

ऐसी ही अवस्था में यशपाल ने शिव वर्मा और जयदेव कपूर की सहायता से सहारनपुर में बम बनाने का कार्य शुरु किया। यह प्रयत्न भी पुलिस की नजरों में गड गया। यशपाल भाग निकले।

सब ओर से निराश, अकेला और पुलिस की खुफिया नजरों से बचाता हुआ यह युवक कलकत्ता आता है। दल की सदस्या सुशीला और भगवतीचरण की सलाह लेकर वहाँ से कश्मीर जाता है। सिर्फ बम निर्माण के हेतु ही।

कश्मीर जैसे सुंदर स्थलपर भी यशपाल का मन नहीं रमता। वे कहते हैं, " संसार के स्वर्ग कश्मीर के सुंदरतम स्थान में, कमल के फूलोंपर नाव में विहार करता हुआ मैं अपने ही गले के लिए फाँसी की रस्सी बाँट रहा हूँ। " [१]

वाइसराय की ट्रेन के नीचे बम विस्फोट करने की योजना के लिए कश्मीर स्थित देवदत्तजी से बम बनाने के नुस्खे यशपालने लिए, और वे वापस आकर बम निर्माण मे संलग्न रहे।

दिल्ली और रोहतक में उन्होंने यह बम निर्माण का कार्य आरंभ किया। सभी महत्वपूर्ण साथी गिरफ्तार हो चुके थे। ऐसी अवस्था में अत्यंत परिश्रम से तैयार किया बम, दिसंबर १९२९ की एक सुबह में यशपाल ने वाइसराय की गाडी के नीचे रखा। यशपाल के जीवन का यह सबसे अधिक साहसिक कार्य था। इसमें वाइसराय बालबाल बच गये।

यशपाल: मौत के घेरे में —

यशपाल कर्मठ क्रान्तिकारी होकर भी हृदय की वीणा को कभी अनसुनी नही कर सकते थे। दल की मुख्य सदस्या प्रकाशवतीजी से उनका मेल-जोल हृदयसे अधिक बढ गया। उनका प्यार साथियों मे चर्चा का विषय बन गया। दल मे रहकर किसी स्त्री से प्रेम - संबंध बढाना दल के अनुशासन के विरुध्द था। बात इतनी बढ गयी कि सेनापति आजाद ने यशपाल को गोली से उडा देने का आदेश दिया। यशपाल पर स्वकीयों और परकीयों की नजरों से फरार होनेकी नौबत आयी। ऐसी अवस्था में भी यशपाल नही डरें।

१. यशपाल : सिंहावलोकन द्वितीय भाग पृष्ठ ५२ संस्करण १९७७.

अपने साथियों के सामने अपने संबंधों को उन्होंने खुल्लम खुल्ला रख दिया। परिणाम यह हुआ कि दल के जो व्यक्ति यशपाल के समर्थक थे उन्होंने स्थिति को सुधारा और वे प्राणदण्ड से मुक्त हुए।

मृत्यु के बादल छंट जानेके बाद यशपाल पुन: क्रान्तिकार्य मे संलग्न रहे। अब तो दोनों प्रेमी कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने लगे। एक हाथ में पिस्तोल और दूसरे हाथ में फूल धारण करनेवाले यशपाल का दल पर अधिक प्रभाव रहा। चंद्रशेखर आजाद की शहादत के बाद यशपाल को सर्वमत से [१९३१]में दल का सेनापति नियुक्त किया गया।

गिरफ्तारी --

यशपाल का यह निर्भीक सेनापतित्व काल को एक वर्ष भी नही देखा गया। २३ फरवरी १९३२ के दिन यशपाल एक आईरिश महिला सावित्रीदेवी के मकानपर थे। मकान हीवेट रोड इलाहाबाद में था। पुलिस को किसीने खबर दी और पुलिस ने मकान को घेर लिया। यशपाल ने स्वरक्षणार्थ गोलियाँ चलाई, और जब उनकी गोलियाँ समाप्त हुई, तब वे पुलिस सुपरिटेंडेंट विल्डिच के हाथों गिरफतार कर लिए गये। गिरफतार होने के बाद उन्हें इलाहाबाद केनिंग रोड के थाने में लाया गया। यही से उनका जेल - जीवन शुरू हुआ।

राजबंदी जीवन --

यशपाल पर पुलिस दल पर गोली चलाने तथा बिना लाइसेन्स हथियार रखनेके अभियोग में लगाये मुकदमे के उपरान्त १४ वर्ष की कठिन सजा हुई। जेल में उनकी सुसंस्कृतता देखकर उन्हें "बी" क्लास की श्रेणी दी गयी। उस वातावरण में भी उन्हें सब प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध थीं। जेलके एकान्त समयका

सदुपयोग यशपाल ने साहित्य के सृजन के लिए किया। "पिंजरे की उड़ान" राजबन्दी यशपाल के करावस की देन है।

विविध :--

यशपाल और प्रकाशवती में सच्चा और दिलेर प्रेम था। स्वयं को १४ वर्षों की सजा जब हुई तब यशपाल ने सोचा कि हो सके तो अपने प्रेम बंधन से प्रकाशवती को मुक्त करें। "मुझे यह न्याय और कर्तव्य जान पड़ा कि मैं अपनी ओर से उन्हें ऐसे बन्धनों से मुक्त कर दूं।" [१] जेल से ही यशपाल ने प्रकाशवती से पत्रद्वारा संपर्क स्थापित किया और व्यंजनात्मक शैली में उन्हें बन्धमुक्त होने की सलाह दी। परिणाम विपरीत ही हुआ। प्रकाशवती यशपाल की ओर और अधिक खींची गयी। तपेदिक की बीमारी से घायल अपने प्रमी के साथ विवाहबध्द होनेका अभूतपूर्व निर्णय प्रकाशवती ने लिया, और विवाह के लिए, जेल सुपरिंटेंडेंट से अनुमती मांगी। प्रकाशवती के निवेदनानुसार दोनों प्रेमियों का विवाह सात अगस्त १९३६ को निश्चित हुआ। डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट से आया सरकारी पत्र, " लहोर निवासी मिस प्रकाश कपूर, बरेली केंद्रीय जेल में बंद आतंकवादी कैदी यशपाल से विवाह करना चाहती है। कैदी यशपाल विवाह करना चाहता है या नही ?" [२] इस पत्र को यशपाल ने स्वीकृति दे दी। प्रकाशवती की माँ और यशपाल की माँ दोनों शादी की गवाह होंगी। क्रान्तिकारी प्रेमी जेल में मैजिस्ट्रेट की उपस्थिति में विवाह बध्द होने जा रहे थे। सभी वृत्त पत्रों मे रजत अक्षरों में इस अनोखी शादी को शोहरत मिली। परिणाम यह हुआ कि जेल के मैन्युअल मे एक धारा और बना दी गयी कि भविष्य में किसी कैदी से कोई शादी नही करेगा।

---

१. यशपाल : सिंहावलोकन-तृतिय भाग - पृष्ठ १६३ संस्करण १९८२

२. यशपाल : सिंहावलोकन -तृतिय भाग : पृष्ठ १६९ संस्करण १९८२.

रिहाई —

शाही के कुछ दिन उपरान्त यशपाल असाध्य रूप से बीमार हो गये। जेल का वातावरण उनके स्वास्थ्य के प्रतिकूल था। इधर प्रकाशवतीजी ने उनकी रिहाईकी व्यवस्था कानूनी तोरपर की थी। उसी समये सौभाग्य से कांग्रेसी सरकार को भी शक्ति मिली, और यशपाल को मुक्त करनेका प्रस्ताव पास किया गया। उत्तर प्रदेश के तात्कालीन मुख्यमंत्री गोविन्द वल्लभ पंतजी और जेल मंत्री रफी अहमद किदवई ने सरकारी तौर से विशेष प्रयत्न किये। कारावास की अवधि पूर्ण होने के सात-आठ वर्ष पूर्व ही दि. २ मार्च १९३८ के शुभ दिन यशपाल कैदी जीवन से आजाद हुअे। ~~उनपर शर्त इकडी लगाई गयी कि~~ रिहाई के बाद यशपाल ने सशस्त्र क्रान्तिकारी का चोला फेंक दिया और साहित्यिक का चोला पहन लिया। अपने हाथ की पिस्तोल फेंक दी और कलम लेकर वे सामाजिक क्रान्ति की ओर प्रचंड वेग से दौड पडे। ऐसे कर्मठ और साहित्य-साधना में रत महान लेखक तथा क्रांतिकारक के व्यक्तित्व की पहचान भी महत्वपूर्ण होती है।

१. रूपाकार —

बाह्य रूप से यशपाल अत्यंत गंभीर और रूखा लगते थे। जिन्होंने उनका अंतरंग देखा है, उन्हें वे नारियल के पानी की तरह मीठे और उपकारक दीख पडे हैं। उनके मुखपर आयी रूखाता विषम परिस्थितिके आघातों के कारण आयी थी।

२. रहन-सहन और वेशभूषा -

बचपन से ही यशपाल पर साफसुथरे पोशाक पहननेके, सलीके की वेशभूषा के संस्कार हो गये थे। अंग्रजी साहबों के पडोस में रहने के कारण उनके मन के किसी कोने में अंग्रजी ढंग की साहबी रहन-सहन के प्रति तीव्र आकर्षण रहा होगा। उनकी यह इच्छा रिहाई के बाद पूरी हुई। लखनऊ की आधुनिकतम कालेनी महानगर ३३५-बी में आज आपका सुंदर और आधुनिक सुखासुविधाओंसे सुसज्ज भव्य "यशपाल-निवास" आपके उच्च-मध्य वर्गीय जीवन के आकर्षण का सुंदर उदाहरण है।

यह एक विरोधाभास है कि साधनहीन और गरीब की वकालत करनेवाला यह साहित्यिक अपने घर में पूंजीपति की आचार-संहिता कोकैसे अपनाता है? इस आक्षेप पर यशपाल का कथन है " मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं, कि साधन हीन श्रेणी को साधनों, सुविधा और शोक के बिना ही संतुष्ट रहना चाहिए।"[१] श्री नागार्जुन ने उनके व्यक्तित्व का एक जगह सुदर अंकन किया है, "आकर्षक व्यक्तित्व, सलीके की रहन सहन बातचित, का नागरिकलहजा, व्यवहार का खरापन, श्रम-शक्ति के प्रति अपार आस्था, अग्राम्य विनोद-वृत्ती, कल्याणमय दूर दृष्टि दृष्टि, अदम्य संकल्प .... ये ढेर सारी खूबियां थीं जिन्होंने हिमाचल प्रदेश [तब का पंजाब] के जिला कांगडा निवासी एक अल्पवयीन क्वारी नौजवान को, पहले तो क्रान्तिकारी और बाद में विश्व विख्यात महान भारतीय कथाकार यशपाल के रूप में विकसित किया .. ..।" [२]

यशपाल की वेशभूषा पक्की तहजीब से भरी, पाश्चात्य वेशभूषा का समूचा अनुकरण करनेवाली और बेहद सलीके की थी।

---

१. यशपाल : अभिनंदन ग्रंथ : ले. पद्मसिंह शर्मा "कमलेश" पृष्ठ २१

२. यशपाल:व्यक्तित्व और कृतित्व, संपादक-रामव्यास पाण्डेय ले. नागार्जुन पृ. २०७ : १९७८.

अश्कजी उनकी वेशभूषा का वर्णन करते है, "बढिया सूट पहने हुए, मैंझाले कद और सांवले रंग का एक युवक, सफाई से काट-छँटे बाल, चौड़ी खुले वक्ष, मोटे होंट, घनी भवें और पिचके हुअे कल्ले। किसी क्रान्तिकारी के बजाय यशपाल मुझे किसी बिगड़े हुअे ईसाई युवक से से लगे।" [१] महेंद्र पटियाला के शब्दों में, "गैबर्डिन की खाकी पैंट और बूट, शरीर पर नीले रंग की कमीज, सफाचट दाढी-मूँछ, घनी भौंहें जो आधे से अधिक सफेद थी, नंगा सिर, मुँह में सिगार ---- इस वेश में वे मुझे पुलिस अफसर से दिखाई दिये। उनका चेहरा रोबीला और सब से ज्यादा आतंकित करनेवाली उनकी भौंहे हैं। आँखें उनकी बडी पैनी और दूरतक घुसनेवाली हैं।" [२]

सयम के पाबन्द -

यशपाल समय का कठोर रीति से पालन करते थे। बार बार घडीपर नजर रखना उनकी आदत ही बन गयी थी। डॉ. सरोज गुप्त ने दि. २४-४-६५ को उनसे मुलाकात की थी। नियत समय से वे पाँच मिनट देरी से पहुँची। देखा, यशपाल अपने लेखन कार्य मे मशगूल हैं। उनके क्षमा याचना करनेपर यशपाल बोले, "यह तो मेरी आदत ही हो गयी है कि मैं किसी भी क्षण को व्यर्थ जाने नही देता। इसलिए मैंने अपना काम शुरू कर दिया था।" [३]

शौक --

यशपाल ने सभी शौक किये थे। लगातार सिगार पिना ,

---

१. यशपाल : अभिनंदन ग्रंथ : व्य . संस्मरण पृ. १७
२. यशपाल अभिनंदन ग्रंथ व्यक्तिगत संस्मरण पृ. २१
३. यशपाल : व्यक्तित्व और कृतित्व , डॉ. सरोज गुप्त पृ. ३० सं.प्रथम.

अंग्रजी शराब पीना , चित्रों और शिल्पों का संग्रह करना, पहाडी प्रदेशों का भ्रमण करना, बागबानी करना , मांस-मछली खाना, कुत्ते पालना आदि आप के खास शौक थे। इतना ही नहीं , वे तो अन्य व्यक्तियों के सामने अपने पुत्र नंदू और आत्मजा मंटा को सिगरेट और शराब पिलाते रहते थे। अपनी पुत्री को अपना जीवन-साथी ढूंढने की पूरी छूट उन्होंने दी थी। इस प्रकार पाश्चात्य संस्कारों से पूर्णत: प्रभावित यशपाल अपने रूढिगत संस्कारों से पूर्णत: मुक्त थे। उनके जीवन में आयी इस व्यवस्था के पीछे आतंकवादी जीवन के क्रूर और कटु अनुभव ही छिपे हुए दीख पडते हैं।

चित्रकारी के साथ यशपाल को अभिनय की भी विशेष रुचि थी। अपने "नशे नशे की बात" नाटक में शराबी "कामता" का सुंदर अभिनय आपने किया था। इस अभिनय के बारे में देवकीनंदन पांडेजी लिखते हैं, "........कई साल के लंबे काल में नाटक प्यासी लखनऊ की जनता ने शायद पहली ही बार ऐसा सुंदर अभिनय देखा होगा।" [१]

निर्भीक वृत्ति —

बचपन से ही यशपाल स्वाभिमानी और निर्भीक थे। चार-पांच वर्ष की उमर में ही आपने एक अंग्रजी मेम को गाली का जबाब गाली से दिया था। इस प्रसंग की याद में वे कहते हैं, "मैंने मेम को गाली से ही प्रत्युत्तर दिया। उसने मारने की धमकी दी तो मैंने भी धमकी से जबाब दिया और भागकर कारखाने में आ छिपा।" [२] आपकी निर्भीकता के कारण ही आप दल के विरोध में, अंग्रेजों के विरोध में समाज, रूढि परंपरा के

---

१. यशपाल : अभिनंदन ग्रंथ , व्यक्तिगत संस्मरण पृ. ३६

२. सिंहावलोकन : प्रथम भाग पृ. ४२ सं. १९७८

विरोध में, अनेकानेक जानलेवा बीमारियों के विरोध में तथा अपने टीकाकारों के विरोध में डटे रहें, और उनका सामना हंसते हंसते करते रहे।

यशपालकी इस सर्वगामी व्यक्तित्व की तुलना अन्य किसी भी क्रान्तिकारी अथवा साहित्यिक के साथ नही की जा सकती। काल की भट्टी में से तपतपकर निकला हुआ वह एक शुध्द कुन्दन ही था।

यशपालकी साहित्य - साधना [कृतित्व]

जवानी में फांसी के फंदे को चूमनेवाला आतंकवादी "हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ" का सेनापति और ढलती उम्र में मोम से भी मृदु अंत:करण रखकर सामाजिक क्रान्ति के सपने देखनेवाले महान साहित्यिक। यशपाल का व्यक्तित्व इस प्रकार दोहरा है। बाहरी वेशभूषा और रहनसहन देखें तो वे "टालस्टाय" जैसे लगते है, और उनके साहित्य में छिपे उनके विचार देखों तो वे "मैक्सिम गोर्की" जैसे लगते हैं।

यशपाल में साहित्य-सृजन की प्रतिभा जन्मजात ही थी। यशपाल जब पांचवी या छटी कक्षा में गुरुकुल कांगडी के विद्यार्थी थे, तब उन्होने "अंगूठी" नामक कहानी लिखकर अपनी साहित्य-साधना का श्रीगणेश किया। अपने संस्मरण में वे कहते है, "हमसे ऊपर की कक्षा के विद्यार्थियोंने इस कहानी की तारीफ की, और मुझे ऐसा भरोसा हो गया कि मैं कहानी लिख सकता हूं। [१]

नेशनल कालिज [redacted] लाहोर में स्व. उदयशंकर भट्टजी ने उनकी इस सृजनशीलता को पहचाना और उन्हें लिखने के लिए प्रोत्साहन दिया। स्व. गणेशशंकर विद्यार्थी व्दारा संपादित

१. सिंहावलोकन : प्रथम भाग ले. यशपाल पृ. ५३ संस्करण १९७८.

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

"प्रताप" और "प्रभा" नामक क्रान्ति की प्रमुख पत्रिकाओं में यशपाल की रचनाएँ जब से प्रकाशित होने लगी तब से वे सच्चे अर्थों में साहित्यिक के नाम से पहचाने जाने लगे।

बचपन से ही उनकी स्वाध्याय की रूचि गजब की थी। गुरुकुल कांगडी में ही उन्होंने आर्यसमाजी लाजवंतरा के घर जाकर उपन्यास, चरित्र, विचार प्रवर्तक लेख आदि सभी प्रकार का साहित्य पढ डाला था।

प्रसिध्द क्रान्तिकारी मन्मथनाथ गुप्त जब १९३१ में फतेहगढ की जेल में थे, तब यशपाल भी उनके साथ थे। उसी जेल में यशपाल ने "पिंजडे की उडान" संग्रह की अधिकांश कहानियाँ लिखी। उनकी इस सर्जनशीलता के बारे में मन्मथनाथ गुप्त कहते है, "वहीं [फतेह गढ जेल में] यशपाल ने अपनी " पिंजडे की उडान " तथा अन्य बहुतसी कहानियाँ लिखी जिनका मै पहला पाठक और प्रशंसक बना। मैंने उसी समय समझ लिया था कि वह अत्यंत उच्च कोटि के कथाकार बनेंगे। ऐसा मैंने उन्हें उन्ही दिनों बता भी दिया।" [१]

विप्लव --

जेल से रिहाई के बाद, १९३८ ई. के बाद सच्चे अर्थ में नियमित रूप से यशपाल की साहित्य-साधना जारी रही। रिहाई के बाद उनके सामने जीविकोपर्जन की मुख्य समस्या थी। अत: प्रारंभ में उन्होंने एक साप्ताहिक पत्रिका में उप-संपादक का काम किया, परंतु वे इससे संतुष्ट नही हो सके। अपनी माता के पास बची सिर्फ 300 रु. की पूँजी लगाकर यशपाल ने "विप्लव पत्रिका" का प्रकाशन शुरू किया। साथ ही उन्होंने उसका उर्दू संस्करण "बागी" का प्रकाशन भी शुरू किया।

---

१. यशपाल : व्यक्तित्व और कृतित्व : व्यक्तिगत - संस्मरण पृ. १५३
संपादक - रामव्यास पाण्डेय : संस्करण - १९७८.

पत्रकार यशपाल —

"विप्लव पत्रिका" का प्रकाशन नया होने के कारण यशपाल और प्रकाशवती दोनों पति-पत्नी को अथक परिश्रम करना पड़ा। पत्रिका के आधे से अधिक लेख स्वयं यशपाल ही दूसरों के नामपर लिखते थे। प्रकाशन का जिम्मा प्रकाशवतीजी ने अपने उपर लिया था। "यशपाल का काम लेख, कहानी लिखना, लेख बटोरना, प्रूफ देखना और पत्रों के पार्सल स्टेशनपर पहुँचाना था, और प्रकाशवती का काम घूमकर पत्रों के ग्राहक बनाना था।" [१]

समाज में साम्यवादी विचार प्रस्तुत करनेवाली यह क्रान्तिकारी पत्रिका अंग्रेजों की आँखोंका तिनका बनी। १९४० ई. में यशपाल को गिरफ्तार किया। उनकी मुक्ति के लिए १२००० रु. की जमानत अथवा पत्रिका को सदा के लिए बंद करनेकी माँग की। मजबूरन यशपाल को अपनी पत्रिका का प्रकाशन बंद करना पड़ा। १९४१ में यशपाल ने अपनी पत्रिका का नाम बदलकर "विप्लवी ट्रक्ट" के नये नामसे उसका प्रकाशन शुरु किया, परंतु इसे भी १९४२ में जब यशपाल को गिरफ्तार किया गया तब से सदा के लिए बन्द करना पड़ा।

"विप्लव" अपने समय का अत्यंत प्रभावी ऐसा समाजाभिमुख पत्र था। हिन्दी का वह प्रथम राजनैतिक पत्र था, जिसके कारण अनेक नगरों और औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूर-संगठन बन सके।

कहानीकार यशपाल —

वास्तव में यशपाल कहानीकार प्रथम है। आपके निम्नलिखित कहानी संग्रहों की सैंकडो कहानियाँ सामाजिक यथार्थ के नग्न दर्शन से ओत प्रोत है।

---

१. हिन्दी कहानी और कहानीकार : ले. प्रा. वासुदेव पृष्ठ २४१ संस्करण १९५७

१. पिंजड़े की उड़ान [१९३९]
२. वो दुनिया [१८४३]
३. ज्ञान दान [१९४३]
४. अभिशाप्त [१९४३]
५. तर्क का तूफान [१८४४]
६. भस्मावृत चिन्गारी [१९४६]
७. फूलों का कुर्ता [१९४९]
८. धर्म युध्द [१९४९]
९. उत्तराधिकारी [१९५१]
१०. चित्रका शीर्षक [१९५१]
११. तुमने क्यों कहा था [१९५४]
१२. उत्तम की माँ [१९५५]
१३. ओ भैरवी [१९५८]
१४. सच बोलने की भूल [१९६२]
१५. खच्चर और आदमी [१९६५]

प्रेमचंद के बाद कहानी के क्षेत्र में चोटी की सफलता पानेवाले एकमात्र कहानीकार रहे है।

उपन्यासकार यशपाल --

उपन्यास के क्षेत्र में आपने असीम यश संपादन किया है। आपने मौलिक, अनूदित, आत्मकथात्मक आदि कई प्रकारो के उपन्यास लिखे।

मौलिक उपन्यास --

१] दादा कामरेड [१९४१], [२] देश द्रोही [१९४३], [३] दिव्या [१९४५], [४] पार्टी कामरेड [१९४७], [५] मनुष्य के रूप [१९४९], [६] अमिता [१९४७], [७] झूठा-सच - १ [१९५८], [८] झूठा-सच - २ [१९६०], [९] बारह घण्टे [१९६३], [१०] अप्सरा का श्राप [१९६५], [११] मेरी तेरी और उसकी बात [ ], [१२] क्यों फंसे [ ].

अनूदित उपन्यास --

१] पक्का कदम,
२] जुलैखाँ
३] फसल

आत्मकथा —

१] सिंहावलोकन : प्रथम भाग [१९५१]

२] सिंहावलोकन : द्वितीय भाग [१९५२]

३] सिंहावलोकन : तृतीय भाग [१९५५]

यशपाल की यह विस्तृत "आत्मकथा" इतिहास और साहित्य का प्रमाणिकता से किया सफल मिलन है। हिन्दी के अभ्यासकों के लिए यह स्मरणगाथा अत्यंत उपकारक साबित हुई है।

निबंधकार यशपाल --

आपके निबंध कहानी की अपेक्षा संख्या में कम है परंतु सभी सामाजिक यथार्थ और राजनैतिक परिचर्या से भरे हैं।

१] न्याय का संघर्ष [१९४०], [२] मार्क्सवाद [१९४१], [३]गांधीवाद की शव परीक्षा [१९४२], [४] चक्कर क्लब [१९४३], [५] बात बात में बात [१९५०], [६] रामराज्य की कथा [१९५०], [७] देखा, सोचा, समझा [१९५१], [८] जग का मुजरा [१९६२], [९] बीबीजी कहती है मेरा चेहरा रोबीला है [१९६१].

नाटककार यशपाल --

यशपाल ने " नशे नशे की बात " [१९५२] शीर्षक एक मात्र नाटक लिखकर अपनी अभिनय निपुणता का परिचय दिया था। इसी एकमेव नाटक से यशपाल ने अपना परिचय सफल नाटककार की हैसियत से हिन्दी नाट्य जगत को दिया है।

संस्मरण --

यशपाल ने केवल दो संस्मरण लिखे हैं --

१] लोहे की दीवार के दोनों ओर [१९५२]

२] राह बीती [१९५३]

इस प्रकार १९३८ से १९७५ तक केवल ३७ वर्षों के अल्प समय में यशपाल ने सर्वस्पर्शी और समृध्द लेखन किया है। आपका लिखा "दिव्या" उपन्यास हिन्दी के सात युगान्तरकारी उपन्यासोंमे गिना गया है। "चित्र का शीर्षक" कहानी संग्रह को १९५५ में "देव पुरस्कार" से सम्मानित किया गया था। "झूटा सच – भाग १ और भाग २" की गणना विश्व के दस सर्वश्रेष्ठ उपन्यासोंमे की गयी है।

आपका संपूर्ण उपन्यास तथा कथा-साहित्य भारत की, अधिकांश भाषाओं में अनूदित हुआ है। "अमिता" को युनेस्को व्दारा आंतर राष्ट्रिय भाषाओमें अनुवाद के लिए चुना गया। "मनुष्य के रूप" उपन्यास नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत सरकार व्दारा भारत की सब भाषा ओं में उपलब्ध कराया गया।

उपाधियाँ, पुरस्कार और सम्मान --

यशपाल की इस महान साहित्य-सेवा का फल उन्हें मिले कई सम्मान और पुरस्कारों में निहित है।

१९५५ में उन्हें " देव पुरस्कार" मिला।

१९५६ में पंजाब सरकार व्दारा " अभिनंदन ग्रंथ" भेंट दिया गया

१९६७ में "साहित्य विशिरधि" की उपाधि दी गयी।

१९६९ में " नेहरू पुरस्कार " दिया।

१९७० में सरकार की ओर से "पद्मभूषण" का किताब बहाल किया गया।

१९७१ में " मंगला प्रसाद " पारीतोषिक मिला।

१९७४ में आगरा विश्वविद्यालय की ओर से "डी. लिट." की पदवी प्रदान की।

१९७५ में "साहित्य वाचस्पति" की उपाधि मिली।

१९७६ में उनके " मेरी तेरी और उसकी बात" उपन्यास पर साहित्य अकादमी का पुरस्कार दिया गया।

जिस महान साहित्यकार को इतने सम्मान मिले जाते हैं उसकी " झूटा सच " नामक उत्कृष्ट कृतिपर निश्चित ही नोबेल पुरस्कार मिलना आवश्यक था। इस बारे में मन्मथनाथ गुप्तजी की व्यथा इस प्रकार प्रकट हुई है, "मैंने झूटा सच की लम्बी आलोचना लिखते हुए एक दशक पहले ही कहा था कि यशपाल नोबेल पुरस्कार के योग्य कलाकार हैं। " [१]

यशपाल की साहित्य-साधना के मापदण्ड —

यशपाल का यह विशाल साहित्य मंदिर चार ही स्तंभोपर स्थिर है। उनके विचार चार धाराओं में विभाजित हुओ हैं।

१. राजनैतिक धारा —

क: मार्क्सवाद का आग्रह —यशपाल कट्टर मार्क्सवादी थे। समाजवाद का अर्थ, समाज का प्रत्येक व्यक्ति कार्य करें और उसकी आवश्यकता के अनुसार उसे अन्न, वस्त्र और सुख के अन्य साधन दिए जाऐं। उत्पादन के समस्त साधनों पर विशेष का अधिकार न होकर समाज अथवा सरकार का अधिकार हो। उनके समूचे साहित्य में श्रमजीवी वर्ग के प्रति आस्था और बूर्झ्वा वर्ग के प्रति क्रोध इसी कारण ही दीख पडता है। उनके साहित्य में साम्यवादी विचारधारा का प्रचार स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। आलोचकों के इस आरोप का उत्तर यशपाल ने " पार्टी कामरेड " की भूमिका में देने का प्रयास किया है, परंतु किसी खास वर्ग या पार्टी के प्रति

---

१. यशपाल : व्यक्तित्व और कृतित्व : संपा. रामला पाण्डेय : व्यक्तिगत संस्मरण - पृष्ठ १५४ संस्करण १९७८.

बार बार ध्यान आकर्षित कराना प्रचार ही होता है। यशपाल के बाद के उपन्यासें में यह पार्टी प्रचार नहीं दीखा पडता।

ख. गांधीवाद का विरोध --

यशपाल ने अपने साहित्य में जहाँ मार्क्सवाद की प्राण प्रतिष्ठा की है, वहाँ गांधीवाद की कटु आलोचना भी की है। " गांधीवाद की शव परीक्षा " और "रामराज्य की आत्मकथा " इन पुस्तकों में यशपाल ने गांधीजी के सत्य अहिंसा जैसे सिध्दान्त सामाजिक एकता के कार्य के लिए नाकाम साबित करने का प्रयास किया है।

गांधीजी अहिंसा को एक शाश्वत सत्य के रूप में मानकर उसी शास्त्र से समाज का उन्नयन करना चाहते थे, जबकि यशपाल उसी अहिंसा को केवल सामाजिक धारणा नही मानता है, न लोक-परलोक को। गांधीवाद के " परलोक के लोभ" अथवा शाश्वत सत्य अहिंसावाद" के बारे में यशपाल कहते है , "गांधीवादी "परलोक के लोभ" या अध्यात्म के नाम से जिस शाश्वत सत्य-अहिंसा का आदेश होता है, इसका प्रयोजन वर्तमान सामंतवादी और पूँजीवादी आर्थिक व्यवस्था की पैदावार के साधनों पर व्यक्तिगत अधिकार की प्रणाली की रक्षा करना ही है। " [१]

यशपाल ने गांधीवादी कांग्रेस सरकार को "निरंकुश शासन" का नाम दिया है। यशपाल , प्रथम समाज का विकास और बाद में समाज अपनी आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों अनुसार अपनी व्यवस्था तथा सत्य-अहिंसा का निश्चय करताहै , इस बात में दृढ धारणा रखते है।

---

१. गांधीवाद की शव परीक्षा - यशपाल -- पृष्ठ २७ : संस्करण १९६१

यशपाल के साहित्य में अहिंसा का लक्ष्य भी भौतिक ही है। "अमिता" उपन्यास इस समाजवादी अहिंसा का सुंदर उदाहरण है। उनका स्पष्ट मत है, " भौतिक सुविधाएँ प्राप्त होनेपर छीना-झपटी, हिंसात्मक विप्लव तथा निरीह जनता को सताना ठीक नहीं है।" [१]

गांधीवाद के "ग्रामोद्योग" की जगह यशपाल विज्ञान के विकास को ही सर्वोपरि मानते हैं। "कलाओं का चरम विकास ही हमारे समाज में पैदावार को इतना बढ़ा सकता है कि पशुओं की तरह श्रम किए बिना सभीको अपनी आवश्यकताएँ पूर्ण करनेका अवसर मिलता है।" [२]

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं, --

गांधी और मार्क्स दोनों भी महापुरुष मानवतावादी सिध्दान्तों में निष्ठावान थे। मार्क्स वर्गसंघर्ष में विश्वास करता था, तो गांधीजी हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया पर आस्था रखते थे। दोनों के मार्ग भिन्न थे। एक आदर्शवादी तो दूसरा यथार्थवादी। जो भी हो, मार्क्स का दर्शन पश्चिमी द्वन्द्वप्रधान संस्कृति के अनुकूल होने के कारण वहाँपर ठीक जँचता है, परंतु भारतीय संस्कृति और आस्थाओंमें वह बिल्कुल विदेशी ही है।

यदि यशपाल जैसे महान साहित्यकार इस विवाद से बचकर भारतीय संस्कृति को और अधिक शुध्द और सौंदर्यशालिनी

- -

१. रामराज्य की कथा : यशपाल - पृष्ठ ३० संस्करण १९५६.
२. गांधीवाद की शव परिक्षा - यशपाल - पृष्ठ ८५ संस्करण १९६१.

बनानेका प्रयास करते तो उनका साहित्य दुराग्रह के दोष से अधिक मुक्त हो जाता।

२. सामाजिक धारा —

यशपाल के समूचे साहित्य में आपने मार्क्स प्रणीत समाजरचना का ही प्रतिपादन किया है। स्त्री-पुरुष योन संबंध, प्रेम - विवाह, जाति, धर्म, रूढियाँ आदि सामाजिक धारणाओं को यशपाल ने समाजवाद की कसोटीपर कसकर ही स्वीकारा है।

क.- स्त्री - पुरुष योन संबंध —

मार्क्स की तरह यशपाल ने भी स्त्री-पुरुष संबंधों को स्वतंत्र रूप में स्वीकारा है, लेकिन वेश्या वृत्ति का प्रखर विरोध किया है। "[redacted] भूख, प्यास, नींद की तरह स्त्री - पुरुष का शारीरिक संबंध भी आवश्यक है। इस में मनुष्य को पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए किन्तु प्यास लगनेपर शहर की गंदी नाली में मुँह डालकर पानी पीना उचित नहीं है। उचित है गिलास के द्वारा स्वच्छ जल पीना।" [१]

यशपाल के ये विचार उनके उपन्यास, निबंध, तथा कथा-साहित्य में प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। अपने व्यक्तिगत जीवन में भी उन्होंने अपनी पुत्री मंटा को अपना जीवन साथी स्वयं खोजने की अनुमति दे दी थी।

यशपाल के नारी संबंधी विचार उनके साहित्य में स्पष्ट दीख पडते हैं। यदि नारी मन से पवित्र है तो अनेक पुरुषों के साथ भोग करने के पश्चात भी वह पवित्र और शुध्द रह सकती है।

१मार्क्सवाद : यशपाल पृष्ठ ९० : संस्करण १९५४.

SHIVAJI ... KOLHAPUR

उनके विचारों के अति आग्रह के कारण ही उनके उपन्यासों की सभी नारियाँ अत्यंत दुर्बल, कामुक और वासना से झुकी हुयी दीख पडती हैं।

ख - धर्म और संस्कृति —

मार्क्सवादी होनेके कारण यशपाल, जाति, धर्म, ईश्वर, संस्कृति आदि में विश्वास नही करते। उनके उपन्यास तथा कहानी साहित्य का एक भी पात्र भाग्यवादी नहीं है। ईश्वर को आगे रखकर उसका डर दिखाकर समाज को लूटनेवाले समाजकंटकों के सारे कारनामों का पर्दाफाश यशपाल ने किया है। ईश्वर का अर्थ उन्होंने इस प्रकार बताया है, " आज ईश्वर का अर्थ है - अपने आप को भगवान के करिन्दे समझानेवालों की श्रेणी के स्वार्थ की प्रेरणा के आगे सिर झुकाना। " [१

धर्म में विश्वास न होने के कारण यशपाल जाति-प्रथा, वर्ण-व्यवस्था, रीति-रिवाज, लोक-परलोक, पाप-पुण्य आदि कल्पनाओंका कडा विरोध करते हैं। वे मार्क्स की तरह धर्म को अफीम मानकर उसे समाज में [१] शोषक [२] शोषित ऐसे दो वर्गोंको ही मानते हैं।

३. आर्थिक विचार धारा —

मार्क्स संसार की सभी प्रकारकी विषमताओं की जड "अर्थ" को मानता है। यशपाल "अर्थ" को ही पूंजीवादी विषमता की जड मानते हैं। समाज के एक छोर पर पूंजीवादी वर्ग है, और दूसरे छोरपर श्रमजीवी [शोषित] वर्ग है। बीच में ही बेचारा मध्य म वर्गीय वर्ग है। यशपाल ने अपने साहित्य में इसी मध्य वर्गीय समाज का ही चित्रण किया है। मध्य वर्ग के तीन प्रकार माने है —

---

१. चक्कर क्लब — यशपाल पृष्ठ १३४ संस्करण १९६३.

१. उच्च मध्य वर्ग

२. मध्यम मध्य वर्ग

३. निम्न मध्य वर्ग

यशपाल के साहित्य में "मध्यम मध्य वर्ग" को अपनाया गया है। इस वर्ग में रोजी, रोटी, चोर-बाजारी, घूस-खोरी, नेतागिरी का शौक, सेक्स के प्रति प्रबल आकर्षण आदि जो समस्याएँ हैं, यशपाल के सभी पात्र इन से घिरे हुये हैं।

यशपाल आधुनिक अर्थव्यवस्था से असंतुष्ट हैं। अतः उनके उपन्यासों में भारत की आर्थिक स्थिति और राजनीतिक वातावरण की परिचर्या साथ साथ आयी है।

यशपाल के मध्य मध्यम वर्गीय पात्र उँचे होटलों में बढ़िया खाना खाते हैं, सिगरेट, बीडी तथा शराब कबाब का शौक करते हैं। हमारे मन में यह विचार आता है कि क्या ये पात्र यशपाल की समाजवादी निति में, जो कि श्रमजीवियों की आर्थिक विषमता की सरमायदार है, ठीक से जँचते हैं ? इसका उत्तर कहींपर भी नहीं मिलता है।

४ - साहित्यिक विचार धारा --

यशपाल जैसे महान साहित्य कार ने निश्चित रूप से अपने सामने साहित्य संबंधी कुछ उद्देश्य रखकर ही साहित्य - साधना की है।

साहित्य का उद्देश्य --

साहित्य के उद्देश्य के बारे में यशपाल कुछ हदतक भारतीय विद्वानों के साथ है। यशपाल का स्पष्ट मत है कि कलाकार का संबंध मानव जीवन के साथ जोडकर उसका प्रचार भी किया जाता है। साहित्य और समाज के संबंध के बारे में यशपाल के विचार स्पष्ट हैं। "हितेन सह साहित्यं तत्साहित्यं" इस परिभाषा का

अर्थ जो साहित्य समाज के लिए हितकारी हो वह सत्साहित्य होता है। साहित्य का समाज के लिए हितकारी होना यशपाल ने भी आवश्यक माना है।

यथार्थवाद और आदर्शवाद --

"देशद्रोही" की भूमिका में यशपाल ने यथार्थवाद और आदर्शवाद की धारणा को स्पष्ट किया है, "चरित्रों और कथाओं के ज्यों चित्रण को ही यथार्थ कहा जा सकता है, और उसको एक विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के हेतु परिवर्तित करके चित्रण करने को ही आदर्शवाद कहते हैं। "[१]

यशपाल का साहित्य "सामाजिक यथार्थवाद" के अंतर्गत आता है। नग्न यथार्थ को अपनाने के बारे में यशपाल का कथन है, " हमारे यथार्थ का नग्न स्वरूप केवल शिश्नोदर का चीत्कार है। वह श्रेणी संघर्ष और राष्ट्र के रूप में प्रकट होता है। वह जघन्य है, परंतु वह हमारी सामाजिक स्थिति की वास्तविकता है। " [२]

यशपाल ने अपने उपन्यासों तथा कहानियों में जो यथार्थ स्वीकृत किया है वह पात्रों के स्वर योनाचार के कारण विकृत हो गया है। " दादा कामरेड " से " क्यों फँसे " तक के उपन्यासों तथा ढेर सारी कहानियों की उनकी यह रूमानियत को प्रो. प्रवीण नायकजी ने " रोमांटिक यथार्थ " [३] की संज्ञा दी है।

---

१. देशद्रोही - भूमिका - पृष्ठ ५ संस्करण - १९६७.
२. देशद्रोही : यशपाल : भूमिका पृष्ठ ५ संस्करण १९६७.
३. यशपाल का औपन्यासिक शिल्प : प्रो. प्रवीण नायक : पृष्ठ ३९

यशपाल और प्रगतिवाद --

मार्क्सवाद जब साहित्य के क्षेत्र में आता है तब वह प्रगतिवाद कहलाता है। प्रगतिवाद कला के क्षेत्र में उपयोगिता और जीवन के क्षेत्र में यथार्थ को लेकर चलता है।

यशपाल प्रगतिवादी कलाकार हैं। वे आध्यात्म, पाप, पुण्य, तीर्थ, व्रत, त्योहार, देव, धर्म आदि को शोषक वर्ग द्वारा शोषण के लिए बनाए साधन ही समझते हैं। वे केवल "अर्थ" मे ही विश्वास करते हैं। श्रीमती प्रकाशवती पाल के शब्दों में - "यशपाल न केवल प्रगतिशील हैं बल्कि प्रगतिशीलों में प्रमुख हैं।" [१]

प्रकाशवतीजी के अनुसार यदि हम यशपाल को प्रगतिशीलों के अग्रणी मानें तो हमे भी मानना पडेगा कि जिस प्रकार हर प्रगतिवादी, प्रचारक पहले होता है, लेखक बाद में, उसी प्रकार यशपाल भी प्रचारक ही थे। कम्यूनिस्ट विचारों का प्रचार करना ही उनका प्रमुख ध्येय था। प्रसिध्द आलोचक डा. रामविलास शर्मा उन्हें प्रगतिवादी लेखक नहीं मानते। प्रो. प्रवीण नायक का मन्तव्य है " यशपाल मे एक प्रगतिशील लेखक के गुण हैं, किन्तु वे इन गुणों का उपयोग सामाजिक पीडा, करुणा, दयनीयता, निरीहता, शोषण, उत्पीडन और असमानता आदि के चित्रण में कम करके समाज की कुरूपता, बीभत्सता, कुत्सा, अश्लीलता के चित्रों को अंकित करने में अधिक करते हैं। यशपाल इन्हीं चित्रों को अपने साहित्य में सफलता से अंकित करने के कारण यदि अपने आपको प्रगतिशील समझ लें तो यह केवल उनका भ्रम है, जिसके लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, अन्य नहीं।" [२]

---

१. यशपाल अभिनंदन ग्रंथ : जीवन और व्यक्तित्व : पृष्ठ ९

२. यशपाल का औपन्यासिक शिल्प : प्रो. प्रवीण नायक: पृष्ठ ४१-४२ संस्करण १९६३

महा - निर्वाण

एक महान साहित्यकार को जितनी उमर चाहिए उतनी उम्बी उमर यशपाल को मिली थी। क्रान्तिकार्य के कठिन पथपर चलते चलते उनकी सेहत अनेकों रोगोंका शिकार तो हो चुकी थी। फरार अवस्था और कैद के दिनोंमें तो बड़े बड़े रोगों ने यशपाल के शरीर में अपना स्थान पक्का किया था। इस महान साहित्यकार के जीवन में झांकनेका मौका यदि किन्हें मिला है तो सिर्फ विविध रोगों को ही। सात वर्ष की आयु में संग्रहणी, कारावास में क्षय, ढलती उमर में मूत्रपिंड की बीमारी, मोतिया बिंदू और कुष्ट रोग आदि बीमारियों का साथ यह वीर हंसते हंसते निभाता रहा। साहित्य - निर्माण में ये भयानक बीमारियाँ मित्र जैसी रहीं।

दिसंबर १९७६ —

दिसंबर, १९७६ की तीन तारीख को नव निर्वाचित प्रगतिशील लेखक संघ ने उनकी ७३ वीं जन्मतिथि बड़े धूम-धाम से मनायी। किसी को भी मालूम नहीं था कि यह जन्मतिथि उनके लिए आखरी पैगाम लेकर आयी है। यशपाल तो ऐसी अवस्था में भी "सिंहावलोकन" का चतुर्थ भाग लिखनेमें व्यस्त थे। उन्हे "मेरी तेरी और उसकी बात" का दूसरा भाग भी लिखना था। साहित्य-साधना में रत यह "जवान" साहित्यिक २६ दिसंबर की सुबह घायल हुआ। ग्लुकोज चढाया गया। थोडी ही देर में इस महान साहित्यिक का विलयन परमातत्व में हो गया। यशपाल की मौत से सारा साहित्य-संसार व्यथित हुआ। उनके इस निर्वाण समय की श्री कृष्णनारायण कक्कडजी की स्मृति बहुत कुछ कह जाती है, " उनके मृत शरीर को उठाया तो किसीने राम-नाम उच्चारित किया, मगर यशपाल की इच्छाओं का ध्यान रखते हुये किसी ने शांत

रहने के लिए कहा। x x x x x x x x x x x हवन आदि में उनका विश्वास न था। x x x x x अपने शरीर को सिर्फ जला दिया जाय ऐसी उनकी इच्छा थी।" [१]

निष्कर्ष

स्वर्गीय यशपालजी की जीवन यात्रा इस प्रकार दोहरी रही है। अपनी युवावस्था में हाथ में [redacted] पिस्तोल लेकर घूमता यह आतंकवादी और खतरनाक क्रान्तिकारी अपनी रिहाई के बाद पिस्तोल फेंक कर कलम हाथमें लेता है, और सामाजिक क्रान्ति का लाल साहित्य बरसाता है। यशपाल के इस दोहरे रूप के कारण वे सभी के पूजनीय रहे।

मार्क्सवाद का प्रचार, गांधीवाद का विरोध ये यशपाल के जीवन के प्रमुख अंग रहें। अंतिम समय तक वे अपने सिध्दान्तों और उसूलों के साथ ऐसे चिपके रहें कि अंतिम क्षण, मृत्यु भी कुछ काल तक इस महान साहित्यकार की दृढ धारणा देखने के लिए रुकी। इस महान साहित्यकार की सामाजिक प्रतिबध्दता देखकर उन्हें महान साहित्यकारोंमें स्थान मिला।

---

१. यशपाल : व्यक्तित्व और कृतित्व : संपादक रामव्यास पाण्डेय : कृष्णनारायण कक्कड - पृष्ठ - २१. संस्करण - १९७८.